1991 की नई आर्थिक नीती और वैश्वीकरण

शितल संभाजी डवरी, हिंदी विभाग राजर्षी शाहू कनिष्ठ महाविद्यालय गडहिंग्लज, जि. कोल्हापूर.

प्रस्तावना :

जून 1991 मे नरसिंहराव सरकारने भारत की अर्थव्यवस्था को नयी दिशा प्रदान की। यह दिशा उदारीकरण ,निजीकरण और विश्वविकरण के रूप मे पुरे देश मे आर्थिक सुधारक के रूप मे लागू की गई ।इस नयी आर्थिक नीती को लागू करने के पीछे मुख्य कारण भुगतान संतुलन का निरंतर नकारात्मक होना था।

आजादी के बाद 1991 का साल भारत के आर्थिक इतिहास मे एक महत्त्वपूर्ण साल साबित हुआ ।इससे पहले देश एक गंभीर आर्थिक संकट के दौर से गुजर रहा था। संकट से उत्पन्न हुई स्थितीने सरकार को मूल्य स्थिरीकरण और संरचनात्मक सुधार लाने के उद्देश से नीतियों का निर्माण करने के लिए प्रेरित किया।

* 1991 की नई आर्थिक नीती =

◌ 1991 की नई आर्थिक नीती लाने की आवश्यकता या कारण -

1. घटिया प्रबंधन के कारण सार्वजनिक उपक्रम घाटे मे चल रहे थे ।

2 आर्थिक स्थिरता के कारण

3 सरकारी राजस्व असे अधिक वेळ होने के कारण 4विदेशी मुद्रा भंडार मे कमी होने के कारण

1991 की नयी आर्थिक नीती लाने की आवश्यकता पड़ी।

* नई आर्थिक नीती के उद्देश -

1 मद्रास्फिती के दर को नीचे करना ।

2 भोगताना असंतुलन को दूर करना।

3 आर्थिक विकास की दर मे वृद्धी करना।

4 विदेशी मुद्रा के भंडार मे वृद्धी करन।

5 आर्थिक स्थिरता को प्राप्त करन।

6 अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रो में निजी क्षेत्रो की भागीदारी को बढान।

नयी आर्थिक नीती के उद्देशों को प्राप्त करने के लिए व्यापार नीती , राजकोषीय निती ,मौद्रिक नीती मे कई महत्वपूर्ण सुधार किये गये है।

भूमंडलिकरण/ वैश्विकरण =

वैश्वीकरण का मतलब है विश्व बाजारीकरण ।देश की अर्थव्यवस्था को विश्व की अर्थव्यवस्था के साथ एकीकृत करने का काम वैश्विकरण करता है। वैश्वीकरण को विभिन्न अर्थशास्त्रीयों ने परिभाषित किया है -

a. मॅकोल्म वेटर्स = वैश्विकरण एक सामाजिक प्रक्रिया है, जिसमे भूगोल द्वारा सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्थाओं को दबाया जाता है ,जिसमें लोग इस बात के लिए जागरूक होने लगते है की उनका प्रशचप्रवन हो रहा है।"१

b. जॉन नैसविट एवं पोर्टसिया के अनुसार "इसे ऐसे विश्व के रूप मे देखा जाना चाहिए ,जिसमे सभी देशों का व्यापार किसी एक देश की और गतिमान हो रहा है ।इसमे संपूर्ण विश्व एक अर्थव्यवस्था है तथा एक बाजार है।२

c. श्रवण कुमार सिंह = "विश्वविकरण का अर्थ है सभी बाजारपेठ की एक ही बाजारपेठ निर्माण करना और उस बाजारपैठ में विश्व साधन सामग्री और सरमाया का सुलभ संक्रमण करना है।"३

अर्थात राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को विश्व के साथ जोडना है।

वैश्विकरण व्यापार को विकसित करता है । लेकिन व्यापार विनिमय के साथ ही भूमंडलीकरण का प्रभाव समाज, साहित्य एवं भाषा पर भी दिखाई देता है। एक और विश्वीकरन से जहाँ मनुष्य दुनिया के साथ जुड़ गया ,वही वह परिवार से,समाज से कट गया। ' संस्कृती और भाषाएँ अब एक क्षेत्र तक ही सीमित नही रहना चाहती क्योंकि आज का युग भूमंडलीकरण का युग है।'४ पहले बाजार केवल विनिमय के रुप मे विद्यमान था ।पर आज यही बाजार परिवा, रिश्तो मे आ गया। बाजार नीति के अनुसार ,'बाजार मनुष्य की, मनुष्य के द्वारा ,मनुष्य के लिए बनायी गई संस्था है। अपने प्रारंभिक रुप में वह विनिमय के माध्यम के रूप मे कार्यरत थ। '५ इस तरह वैश्वीकरण किसी अर्थव्यवस्था का विश्व अर्थव्यवस्था के साथ एकीकरण के रूप मे जाना जाता है जो एक जटिल परिघटना मानी जाती है।

×¤ वैश्विकरण के लाभ ==

1. आंतरराष्ट्रीय स्तर पर सहयोग -

आंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापारिक संबंध बनाये रखने हेतू विश्व के सदस्य देशो का आपसी सहयोग बेहत आवश्यक होता है। इसके अंतर्गत एक देश दुसरे देश को सहयोग देकर सीमा के अंदर व्यापार से संबंधित कार्य करने की अनुमती प्रदान करता है।

2. आर्थिक समानता ==

वैशवीकरण का प्रमुख उद्देश देश मे फैली आर्थिक असमानताओ को दूर करना होता है। आर्थिक असमानताओं को दूर करने से विकासशील देशों एव अल्पविकसित देशों को विकसित देशों की श्रेणी मे लाने मे आसानी होती है।

3. विश्व-बंधुत्व की भावना का विकास== वैश्विकरण के कारण विश्व भर मे विश्वबंधुता की भावना विकसित होती है। यदि किसी देश मे प्राकृतिक या अप्राकृतिक विपत्ती आ जाए तो उस देश को विश्व के विकसित देशद्वारा यथा संभव भरपूर आर्थिक एवं मानवीय सहयोग प्राप्त होता है। वैशवीकरण को स्वीकार करने का यह भी एक मुख्य कारण माना जाता है।

4. विकास हेतू नवीन साझेदारी ==

वैश्विकरण के कारण आंतरराष्ट्रीय स्तर पर नई संधीयों एवं नए संघठनौ के साथ मिलकर देश की अर्थव्यवस्था मे सुधार लाने का कार्य किया जाता है। जिसके फलस्वरूप अल्प -विकसित देशो मे विकास की गती को बढावा मिलता है।

वैशवीकरण के सिद्धांत =

विश्व के सदस्य देशों को एकीकृत करने एवं आंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को बनाये रखने के संदर्भ मे वैश्वीकरण का निर्माण किया गया है। वैश्विकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत समस्त देशों की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक आदि शक्तीयों को संयोजित किया गया ह। वैश्विकरण का मूल सिद्धांत विश्व मे सभी देशों के बीच व्यापार एवं आदान -प्रदान को बढावा देना है।

वैश्विकरण के प्रभाव

1. वैश्विकरण की आर्थिक प्रभाव –

यह प्रभाव बहुत ही सकारात्मक दिखाई देता है। वैश्विकरण को आर्थिक विकास की दृष्टि से देखा जाता है। दुनिया भर में आंतरराष्ट्रीय मुद्राकोश (I. M. F)एवं विश्व व्यापार संघटन (W. T. O.) विश्ववीकरण की आर्थिक नितियों को निर्धारित करते है । वैश्विकरण के प्रभाव से कई विकसित देशों में उपभोक्ता मूल्य मे कमी होती है जिसके कारण आंतरराष्ट्रीय व्यापार शक्ती का संतुलन बना रहता है।

वैश्विकरण का विभिन्न देशों में अलग अलग प्रभाव दिखाई देता है। वैशवीकरण के कारण एक और कई देशो की अर्थव्यवस्था अन्य देशों के मुकाबले पिछड़ रही है तो दुसरी और कूई देशो की अर्थव्यवस्था तेज गती से प्रगती कर रही हैं।

2. वैशवीकरण के राजनीतिक प्रभाव –

१) इसका अधिक प्रभाव राष्ट्रीय राज्य मे देखा जाता है। इससे तकनीकी क्षेत्र में अव्वल राज्यों के नागरिकों के जीवन प्रणाली का स्तर मूलरूप से बडा है ।विश्व मे सूचनाओ के आधार- प्रदान के तीव्र होने से जीवन सहज होता देखा गया है ।

२) इसके कारण कई राज्य अपने मुख्य कार्य को करने तक ही सीमित रह गये है । जैसे कानून व्यवस्था को बनाये रखने एवं प्रदेश के नागरिकों की सुरक्षा करना ।

३) इसके कारण कुछ राज्य की शक्तीयों में वृद्धी भी हुई है। जैसे की राज्यों के अधिकारों के अंतर्गत अत्याधुनिक प्रद्योगिकी अपने नागरिकों की सूचनाएं जुटाने में सक्षम है।

3. वैश्विकरण के सांस्कृतिक प्रभाव –

वैश्वीकरण के कारण लोगों के सांस्कृतिक जीवन पर भी बहुत प्रभाव पडा। सांस्कृतिक वेश्विकरण दुनिया भर में विचारों एवं मूल्य को प्रसारित करता हैं। जिससे सामाजिक संबंधो का विस्तार हो सके। साथ ही साथ मे इसमे प्रमुख हे संचार माध्यम। इसमे रेडिओ, दूरचित्रवाणी(टेलिव्हिजन), संगणक(कॉम्प्युटर)आदि प्रसार माध्यम द्वारा शिक्षा का प्रसार होने लगा है। पढ़ने या पढाने वालो की संख्या भी बढती जा रही है।

4. वैशवीकरण का श्रमिकों पर प्रभाव–

इसके कारण कई विकसित देशों की व्यापारी प्रतिस्पर्धा मे कमी आयी हैं। जिसके कारण उत्पादको की मात्रा मे गिरावट आई है। इसके परिणाम स्वरूप मौजदा उद्योग मे रोजगार मे कमी हुई है ।सामाजिक दृष्टि से वैश्विकरण से कई देश के नागरिकों की जीवन प्रणाली प्रभावित हुई है ।जिसे न केवल देश की सामाजिक व्यवस्था पर असर पडा हैं बल्कि अर्थव्यवस्था भी प्रभावित हुई है।

वैश्विकरण के दुष्परिणाम

वैश्विकरण के कई लाभ के साथ साथ कुछ दुष्परिणाम भी हो रहे है जो भविष्य के लिए एक बडे खतरे के रूप में उभर सकते है –

1. भविष्य में नए वायरस के फैलने की संभावना बड गई–-

वैश्विकरण के कारण ,करोडो लोग एक देश से दुसरे देश की यात्रा करते है ।यही कारण हे की कोरोना व्हायरस आज दुनिया भर में फेल गया है ।भविष्य मे भी कोई बडी बात नही है कि ये दुनिया कोई नये वायरस का सामना करे ।

2) आपूर्ति श्रृंखला और व्यापार का दुरुपयोग –

आज हम एक नये प्रकार की भू -राजनीति देख रहे है ।आज कई देश दुसरे देशो की निर्भरता का लाभ उठा रहे है ,व्यापार और आपूर्ति श्रृंखलाका उपयोग भू राजनीति मे किया जा रहा है।

+ उदाहरण के लिए— ऑस्ट्रेलियाने हाल ही हाल मे कोरोना व्हायरस की उत्पत्ती के संबंध मे चीन मे एक जांच का समर्थन किया था ।ऑस्ट्रेलिया काफी हद तक चीन पर निर्भर है ,ऑस्ट्रेलिया के लिए चीन एक बहुत बडा बाजार है ।इसका फायदा उठाते हुए चीन ने ऑस्ट्रेलिया से कुछ उत्पादों का बहिष्कार शुरू कर दिया।

3) पर्यटन के कारण प्रदूषण –

प्रदूषण भी एक बडा खतरा है ,बहुत से लोग पहाडो पर जाते है, या समुद्र तट पर घुमने जाते है उन जगह पर प्रदूषण लगातार बढ रहा है।

4) देशों के बीच असमानता बढी—

कुछ लोग मानते है की विकसित देश वैश्विकरण के कारण अधिक धनी होते जा रहे है, और विकासशील देशों को एक बाजार के रूप मे उपयोग कर रहे है।

5) ब्ल्यू चूप ब्लू चिप कंपनीयों की बढती ताकद –

वैश्विकरण के कारण बहुत बडी ब्ल्यू चीप कंपनीयों का वर्चस्व बढ़ रहा है ।इसके कारण एखाधि कार का खतरा भी बढ रहा है और कुछ लोगों के पास बहुत अधिक संपत्ती आ गई है इससे भविष्य मे समाज मे असमानता पैदा हो सकती है।

सारांश

वैश्विकरण प्रत्येक समाज के ऐतिहासिकता द्वारा संचलित होता है, यह समाज और उसकी अर्थव्यवस्था तथा संस्कृती को समान तरिके से प्रभावित नही करता ह। वैश्विकरण एक मिश्रित प्रक्रिया है, अतः इसका परिणाम आर्थिक ,सामाजिक, सांस्कृतिक क्षेत्र मे भी पडा है। साथ ही साथ यहा पर 1991 की नई आर्थिक नीती का किस तरह वैशवीकरण पर प्रभाव पडा यह बता दिया हैं। वैशवीकरण की अलग अलग परिभाषा बता दी है और वेशवीकरण का अलग अलग क्षेत्र पर होने वाला प्रभाव और उसके कुछ दुष्परिणाम भी यहा पर बताया है। साथ में वैश्विकरण के लाभ यहा पर बताया है ।वैशवीकरण के कारण भारत संचार क्रांती की प्रगती से तीव्र विकास की दर प्राप्त की है।

संदर्भ

1. यादव (डॉ.) पुरनमल ,भट्ट(डॉ.) दिनेशचंद्र – वैश्विकरण : एक समाजशास्त्रीय अवधारणा।
2. www.economicsdisussion.net (Essay on Globalization Hindi /Economics Process Article - manicklalc)
3. सोनटक्के (डॉ.) माधव- वैश्विकरण के परिप्रेक्ष मे भाषा और साहित्य।
4. (सं.)शर्मा (डॉ.) प्रणव, गोस्वामी (डॉ.)प्रणिता- हिंदी का अस्मिता पर्व, भूमिका से।
5. (सं) धापसे (डॉ.) बी .आर– इक्कीसवी शती और हिंदी साहित्य- शिंदे संग्राम।
6. घरपणकर (डॉ.) हिंदूराव रामचंद्र– प्रेमचंद के कथा- साहित्य मे गाव।